प्रेरणा दीप

- संकलित

प्रेरणा दीप के अन्तर्गत दो प्रसंग संकलित किए गए हैं :-

प्रथम प्रसंग में करूण भाव के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है। निषाद के तीर से व्यथित नर क्रौंच की करूणा ने वाल्मीकि ऋषि को अन्तर्मन से झकझोर दिया। इस करूणा ने निषाद को अभिशाप के रूप में एक ऐसे श्लोक का सृजन करवाया जो आगे चलकर महाकाव्य रामायण की रचना का स्रोत था।

दूसरा प्रसंग महाभारत से संकलित है। कुरूक्षेत्र के मैदान में पाण्डवों और कौरवों की सेनाएँ आमने-सामने हैं। अर्जुन को अपने परिजनों का नेह उनसे युद्ध करने में बाधा डालता है। तब श्री कृष्ण उसे अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा व कर्मयोग का उपदेश देते हैं। युद्ध प्रारंभ होने के पूर्व युधिष्ठिर विरोधी पक्ष में भीष्म के पास जाते हैं। उनके भाई भीष्म को प्रणाम कर विजय का आशीर्वाद लेते हैं। वे द्रोणाचार्य व कृपाचार्य से भी विजय का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। सतत् निष्काम कर्म, धर्मपालन, कर्त्तव्यनिष्ठा एवं विनम्रता की महत्ता इस प्रसंग में मुखर हुई है।

महर्षि वाल्मीकि

एक दिन दोपहर के समय महर्षि वाल्मीकि तमसा नदी के किनारे प्रकृति की सुंदरता का आनंद ले रहे थे। बसंत उतर रहा था। पेड़ों की छाया सुखद लगने लगी थी। वन, पर्वत सब हरे-भरे थे। तमसा मंद गति से बह रही थी। नदी का जल निर्मल था। उसमें तैरती हुई मछलियाँ चमक रही थीं, और नदी तल भी साफ दिखाई दे रहा था। हरे-भरे वन में भाँति-भाँति के पक्षी कलरव कर रहे थे। नदी के किनारे लंबे चोंचवाले चटकीले रंग के पक्षी एक पाँत में ध्यान लगाए बैठे थे। उनमें से कभी कोई तेजी से उड़ता और तीर की तरह पानी में चोंच डुबोकर कुछ पकड़कर ले जाता ।

नदी के तट की शोभा को देखकर महर्षि वाल्मीकि के मन में अपार हर्ष था। सहसा उनके कान में क्रौंच पक्षी की सुरीली ध्वनि पड़ी। आँख उठाई तो देखा कि क्रौंच पक्षी का एक जोड़ा नदी तट पर कल्लोल कर रहा है। क्रौंच कभी चोंच से चोंच मिलाते, कभी अपनी लंबी गर्दन साथी की गर्दन में लपेट देते और कभी चोंच से एक दूसरे की पीठ सहलाते। कभी थोड़ा सा उड़कर वे इधर-उधर बैठ जाते और फिर पास आकर खेलने लगते। महर्षि वाल्मीकि को ये क्रौंच बड़े प्यारे लग रहे थे।

इतने में नर क्रौंच को निषाद का तीर कहीं से आकर लगा और वह छटपटाने लगा। पति की यह दशा देखकर क्रौंची अत्यंत करुण स्वर में रोने लगी। क्रौंच की यह दशा देखकर ऋषि का हृदय करुणा से भर गया। वे शोक-सागर में डूब गए। उनके हृदय की करुणा -

''मा निषाद् प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रोञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥''

(हे निषाद्! तू बहुत दिन तक प्रतिष्ठित न रह सकेगा, क्योंकि तूने क्रौंच के जोड़े में से काम-मोहित नर पक्षी को मार डाला है।) श्लोक के रूप में फूट पड़ी।

बड़ी देर तक वाल्मीकि शोक के कारण बेसुध से रहे। जब वे स्थिरचित हुए, तब अपने प्रिय शिष्य भारद्वाज से बोले, ''भारद्वाज मेरे शोक-पीड़ित हृदय से वीणा की लय में गाने योग्य चार पदों और समान अक्षरों का यह वचन अनायास ही निकला है। मेरा मन कह रहा है कि अवश्य ही यह प्रसिद्ध होगा ।'' भारद्वाज ने यह श्लोक कंठाग्र कर लिया और गुरु को सुनाया । इसे सुनकर वाल्मीकि बड़े प्रसन्न हुए। उन्होनें स्नान किया और वल्कल वस्त्र पहनकर शिष्य के साथ वे अपने आश्रम को चल दिए।

मार्ग में भी वाल्मीकि 'मा निषाद्' गुनगुनाते चले जाते थे। उनका ध्यान श्लोक के अर्थ पर गया। अर्थ बोध से उनको बड़ा दुख हुआ। वे सोचने लगे कि मैंने व्यर्थ ही निषाद् को इतना कठोर शाप दे दिया। इसी चिन्ता में मग्न वे चले जा रहे थे कि उनको नारद जी की वाणी याद आयी। एक बार नारद जी से उन्होंने पूछा था, हे देवर्षि मुझे किसी ऐसे पुरुष का नाम बताइए जो गुणवान, बलवान और धर्मात्मा हो, जो सत्य पर दृढ़ रहता हो, अपने वचन का पक्का हो, सबका हित करने वाला हो, विद्वान हो और जिससे बढ़कर सुंदर कोई दूसरा न हो।''नारद जी ने कहा था कि ऐसे एक ही पुरुष को मैं जानता हूँ । वे इक्ष्वाकुवंश के राजा दशरथ के पुत्र राम हैं । वे सब तरह से गुणवान और रूपवान है और जब क्रोध करते हैं तब डर के मारे देवता और दानव भी काँप उठते हैं ।

कहते हैं एक दिन वाल्मीकि जब ध्यान में बैठे निषाद् गुनगुना रहे थे, सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी ने दर्शन दिए। ब्रह्माजी बोले, ''ऋषिवर मेरी ही इच्छा वाणी अनायास आपके मुँह से निकली और श्लोक रूप में इसलिए निकली है कि आप अनुष्टुप छंदों में रामचंद्र के संपूर्ण चरित्र का वर्णन कीजिए। श्रीराम के संबंध में आप नारद जी से सुन ही चुके हैं। मेरे आर्य राम, लक्ष्मण, सीता और राक्षसों का गुप्त अथवा सब वृतांत आपकी आँखों के सामने आ जाएगा, जो होगा वह भी दिखाई पड़ेगा। अत: जो आप लिखे यथार्थ और सत्य होगा। इस प्रकार आपकी लिखित रामायण इस लोक में अमर हो जाएगी।''

इतना कहकर ब्रह्माजी अंतर्धान हो गए। श्लोकों में श्रीराम के चरित्र का वर्णन करते समय श्लोक मधुर और सुंदर थे। उनका अर्थ समझने में कठिनाई नहीं होती थी। उनके सामने राम, लक्ष्मण, दशरथ और दशरथ की रानियों का हँसना चलना-फिरना प्रत्यक्ष हो गया और वे बिना रुके रामायण कथा लिखते रहे और चौबीस हज़ार श्लोकों में उन्होंने रामायण लिख डाली।

कृष्ण का कर्मयोग

प्रात: काल ही कुरुक्षेत्र में कौरवों की ग्यारह अक्षौहिणी और पांडवों की सात अक्षौहिणी सेनाएँ अपने- अपने सेनापतियों द्वारा रचे गए व्यूह के अनुसार आमने-सामने आ डटीं । कौरव-सेना के आगे थे उनके प्रधान सेनापति पितामह भीष्म। पांडव सेना के आगे थे महाधनुर्धर पराक्रमी अर्जुन, जिनके नंदिघोष रथ का संचालन श्री कृष्ण कर रहे थे। कौरवों और पांडवों की अपार सेना एक अद्भुत रोमांचकारी दृश्य उपस्थित कर रही थी।

पांडव सेना के अग्रभाग में नंदिघोष रथ पर बैठे हुए महापराक्रमी अर्जुन ने देखा कि कौरव वाहिनी के प्रधान नायक महारथी भीष्म पितामह सबसे आगे हैं। उनके विशाल रथ के एक ओर रथी दु:शासन हैं कुछ ही दूरी पर मुक्ताओं से जड़ित सुंदर रथ पर कौरवराज दुर्योधन हैं। पास ही गुरु द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा हैं । अर्जुन ने इन सभी संबंधियों को देखा और उनके मन में यह विचार पैदा हुआ कि मेरे सामने मेरे पितामह, गुरु, भाई-बंधु और सगे संबंधी खड़े हैं। इन्हीं से हमें युद्ध करना है। जिस राज्य के लिए हमें युद्ध करना है, वह राज्य हमें अपने भाइयों को मारकर प्राप्त होगा। प्रियजनों की मृत्यु से स्त्रियाँ विधवा होंगी, अनाचार बढ़ेगा, बच्चे अनाथ हो जाएँगे। स्वजनों की मृत्यु से प्राप्त यह राज्य लेकर क्या

होगा? यह विचार आते ही अर्जुन का हृदय काँप उठा। उनके हृदय में निराशा का संचार हुआ और ऐसा लगा कि गांडीव उनके हाथ से छूटकर गिर जाएगा।

अर्जुन को इस मोह की स्थिति में देखकर कृष्ण को आश्चर्य हुआ। अर्जुन को दु:खी दुर्बल और शिथिल होते देखकर कृष्ण ने उनसे इसका कारण पूछा । अर्जुन ने कहा, ''ऐसा युद्ध करना अधर्म है, जिसमें स्वजनों का वध करना पड़े। मैं इसी बात से दुर्बल और शिथिल हो रहा हूँ।'' अर्जुन के इस मोह और भ्रम को दूर करने के लिए श्रीकृष्ण ने उन्हें कर्मयोग का उपदेश दिया। यह उपदेश श्रीमद्भगवद्गीता के रूप में आज भी सारे विश्व में प्रसिद्ध है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उनका धर्म समझाते हुए कहा ''अर्जुन तुम तो एक निमित्त मात्र हो, होनी पहले हो चुकी है। तुम्हें केवल अपने क्षात्र-धर्म के अनुसार चलना है और इस युद्ध में यशस्वी होना है। स्वजनों के प्रति मोह के कारण तुम्हें अपने धर्म से विमुख नहीं होना चाहिए। धर्मपालन के लिए युद्ध करना ही तुम्हारे लिए श्रेयस्कर है। अधर्म के कारण कौरवों का नाश हो चुका है। तुम्हें विश्वास न हो , तो देखो।''

भगवान कृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट रूप दिखाया जिसे देखकर अर्जुन काँप उठे। उन्होंने, देखा एक विशाल अग्नि -ज्वाला, जिसमें चारों ओर से कीड़े-मकोड़े आते हैं और समाकर भस्म हो पाते हैं उसी तरह समस्त कौरव भी कृष्ण के मुख में समा रहे हैं, जैसे शत सहस्र नदियों का प्रवाह। अर्जुन की चेतना जगी। उन्होंने भगवान् कृष्ण की स्तुति की। श्रीकृष्ण का यह उपदेश उनके मन में बैठ गया। ''आत्मा अमर है, उसके लिए शोक करना अनुचित है। **फल की चिंता छोड़कर कर्त्तव्य पालन ही मनुष्य के लिए श्रेयस्कर है** ''कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्'' अर्जुन का मोह दूर हो गया। उन्होंने युद्ध को धर्म समझकर गांडीव ग्रहण किया और वे युद्ध के लिए तत्पर हो गए।''

कौरव और पाण्डव सेनाएँ युद्ध प्रारंभ होने की प्रतीक्षा में व्यग्र थीं । इसी समय धर्मराज युधिष्ठिर रथ से उतरकर पैदल ही उस और चले, जिधर भीष्म पितामह का रथ शोभित था। महाराजा युधिष्ठिर की यह दशा देखकर पांडव चंचल हो उठे। भीम, अर्जुन आदि को युधिष्ठिर का यह आचरण अच्छा न लगा। पर युधिष्ठिर युद्ध के समय भी गुरुजनों को प्रणाम करने और आशीर्वाद प्राप्त करने जा रहे थे। ऐसे संकट के समय में भी अपना धर्मपालन नहीं भूल सकते।

युधिष्ठिर को भीष्म की ओर जाते देखकर कौरव भी तरह-तरह की कल्पना करने लगे। उन्होंने सोचा कि युधिष्ठिर डरकर संधि के लिए पितामह के पास जा रहे हैं, किन्तु ऐसा नहीं था। कृष्ण का अनुमान ही सही था युधिष्ठिर ने पितामह भीष्म के पास जाकर उनके चरण स्पर्श कर उन्हें प्रणाम किया। पौत्र का यह शील और शिष्टाचार देखकर महामति भीष्म अत्यंत पुलकित हो उठे और उन्होंने आशीर्वाद दिया, ''वत्स तुम्हारी विजय हो। मैं माता सत्यवती से प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि राजा का पक्ष लूँगा, इसलिए कौरवों की ओर से ही मुझे युद्ध करना होगा। तुम निश्चिन्त रहो, धर्म में अपार शक्ति है। अर्जुन मुझसे भी अधिक पराक्रमी है। मैं समय पर ही प्राण त्याग करूँगा। प्राण विसर्जन के पूर्व तुम आना, तुम्हें धर्मोपदेश दूँगा। तुम्हारे सहायक कृष्ण हैं, विजय तुम्हारी ही होगी। '' भीष्म से आशीर्वाद प्राप्त कर धर्मराज द्रोणाचार्य और कृपाचार्य के पास भी गए और उन्हें प्रणाम कर उनसे भी विजय का आशीर्वाद प्राप्त किया। युधिष्ठिर की इस धर्मनीति को देखकर धृतराष्ट्र का पुत्र युयुत्सु इतना प्रभावित हुआ कि कौरव सेना छोड़कर पांडवों से जा मिला। युधिष्ठिर ने उसे गले लगा लिया।

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. रामायण के रचयिता कौन हैं ?
2. नदी के तट पर किस पक्षी का जोड़ा था?
3. वाल्मीकि के शिष्य का नाम क्या था? बताइए ।
4. राम के वंश का नाम लिखिए ।

5. कौरव सेना के सेनानायक का नाम क्या था?

6. युधिष्ठिर कौरव की सेना में क्यों गए थे?

7. वाल्मीकि ने निषाद को क्या और क्यों अभिशाप दिया?

8. वाल्मीकि को ध्यान के समय ब्रह्मा जी ने दर्शन देकर क्या कहा ?

9. श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपने विराट स्वरूप में क्या दिखलाया ?

10. माता सत्यवती से भीष्म ने क्या प्रतिज्ञा की थी?

11. तमसा नदी की प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन कीजिए।

12. नारद जी की वाणी याद आने पर वाल्मीकि ने नारद जी से क्या पूछा तथा नारद जी ने क्या उत्तर दिया? लिखिए।

13. श्रीकृष्ण का कर्मयोग संक्षिप्त में समझाइए।

14. कुरुक्षेत्र में खड़ी सेनाओं का वर्णन कीजिए।

योग्यता विस्तार :

1. श्रीकृष्ण द्वारा कही गई जिन बातों ने आपको प्रभावित किया हो, उन्हें लिखिए ।

2. महाभारत के युद्ध को रोकने के लिए श्री कृष्ण के प्रयासों की जानकारी प्राप्त कर लिखिए।

3. रामायण के दस प्रमुख पात्रों की सूची बनाइए।

4. रामायण एवं महाभारत से संबंधित चित्रों को छाँटकर एक एलबम तैयार कीजिए ।

5. **''अपनी आत्म ज्योति से पुलकित**
अपने सूर्य स्वयं बन जाओ। ''

उपर्युक्त पंक्तियों से प्रेरणा लेकर इसे अपने जीवन में ढालने का प्रयास आप किस प्रकार करेंगे? विचार कीजिए और अपने शिक्षक को बताइए।

शब्दार्थ

आदि-प्राचीन, परिजन-परिवार के लोग, शोक-दु:ख, व्यूह - योजना, पराक्रमी-बलशाली, यशस्वी-यश को प्राप्त करने वाला ।

* * *